❍ 03 / 12 / 21 की मुरली से चार्ट ❍

⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *सुबह उठते ही बाबा को "गुड मोर्निंग" कहा ?*

➢➢ *किसी देहधारी के नाम रूप में तो नहीं अटके ?*

➢➢ *तड़फती हुई प्यासी आत्माओं की प्यास बुझाई ?*

➢➢ *कल्याण की भावना रख शिक्षा दी ?*

———————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ जैसे यह देह स्पष्ट दिखाई देती है वैसे अपनी आत्मा का स्वरूप स्पष्ट दिखाई दे अर्थात् अनुभव में आये। *मस्तक अर्थात् बुद्धि की स्मृति वा दृष्टि से सिवाए आत्मिक स्वरूप के और कुछ भी दिखाई न दे वा स्मृति में न आये। ऐसे निरन्तर तपस्वी बनो तब हर आत्मा के प्रति कल्याण का शुभ संकल्प उत्पन्न होगा।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
✪ *श्रेष्ठ स्वमान* ✪
⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं संगमयुगी बेपरवाह बादशाह हूँ"*

〰✧ सदा अपने को संगमयुगी बेपरवाह बादशाह हूँ - ऐसे समझते हो? पुरानी दुनिया की कोई परवाह नहीं। सदा दिल में ब्रह्मा बाबा समान क्या गीत गाते हो? परवाह थी पार ब्रह्म में रहने वाले की, वह तो पा लिया, अभी क्या परवाह! तो बेपरवाह बादशाह हो, गुलाम नहीं। *इस बादशाही जैसी और कोई बादशाही नहीं। क्योंकि यह बादशाही डायरेक्ट बाप ने दी है। और जो भी बादशाही मिलती है वह या तो धन दान करने से मिलती है या आजकल के वोटों से मिलती है और आपको स्वयं बाप ने राजतिलक दे दिया। इस राजतिलक के आगे सतयुग का राजतिलक भी कोई बड़ी बात नहीं।* तो यह राजतिलक पक्का लगा हुआ है या मिट जाता है?

〰✧ अभी-अभी राजा और अभी-अभी गुलाम - ऐसा खेल तो नहीं करते हो? बेपरवाह बादशाह - यह कितनी अच्छी स्थिति है! जब सब-कुछ बाप के हवाले कर दिया तो परवाह किसको होगी - बाप को या आपको? बाप जाने। *जब अपने जीवन की जिम्मेवारी बाप के हवाले की है तो बाप जाने। ऐसे तो नहीं - थोड़ा-थोड़ा कहीं अपनी अथॉरिटी को छिपाकर रखा हो, मनमत को छिपाकर रखा हो। अगर श्रीमत पर हैं तो बाप के हवाले हैं।* सच्ची दिल से बाप के हवाले सबकुछ कर दिया तो उसकी निशानी सदा डबल लाईट होंगे, कोई बोझ नहीं होगा। अगर किसी भी प्रकार का बोझ है तो इससे सिद्ध है कि बाप के हवाले नहीं किया। जब बाप ऑफर करता है कि सब बोझ मेरे को दे दो और तम

हल्के हो जाओ, तो क्या करना चाहिए? ऐसा सर्वेन्ट फिर नहीं मिलेगा। अनेक जन्म बोझ रखकर देख लिया, बोझ से क्या हुआ? नीचे ही होते गये।

〰✧ *अब डबल लाइट बन उड़ते रहो। तन-मन-धन सब ट्रांस्फर कर दो। कोई कहते हैं - और कोई बोझ नहीं है लेकिन थोड़ा-थोड़ा सम्बन्ध का बोझ है। तो सर्व सम्बन्ध बाप से नहीं जोड़ा है तब बोझ है। वायदा है सर्व सम्बन्ध एक बाप से। तो कोई बोझ नहीं। आराम से दाल-रोटी खाओ और उड़ती कला में उड़ो।* कहाँ भी रहते बाप को भोग लगा कर खाते हो तो ब्रह्मा भोजन खाते हो। ब्रह्मा भोजन खाओ, खूब नाचो और मौज मनाओ। अभी मौज में नहीं रहेंगे तो कब रहेंगे!

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ (बापदादा ने ड्रिल कराई) एक सेकण्ड में अपने को अशरीरी बना सकते हो? क्यों? संकल्प किया मैं अशरीरी आत्मा हूँ, तो कितना टाइम लगा? सेकण्ड लगा ना! तो *सेकण्ड में अशरीरी, न्यारे और बाप के प्यारे - ये ड्रिल सारे दिन में बीच-बीच में करते रहो।*

〰✧ करने तो आती है ना? *तो अभी सब एक सेकण्ड में सब भलकर

एकदम अशरीरी बन जाओ* (बापदादा ने 5 मिनट ड्रिल कराई) अच्छा। इस ड्रिल को दिन में जितना बार ज्यादा कर सको उतना करते रहना।

〰✧ चाहे एक मिनट करो। तीन मिनट, दो मिनट का टाइम न भी हो एक मिनट, आधा मिनट *यह अभ्यास करने से लास्ट समय अशरीरी बनने में बहुत मदद मिलेगी।* बन सकते हैं?

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *कर्तव्य करते हुए भी कि मैं फ़रिश्ता निमित्त इस कार्य-अर्थ, पृथ्वी पर पाँव रख रहा हूँ, लेकिन मैं हूँ अव्यक्त देश का वासी, अब इस स्मृति को ज़्यादा बढ़ाओ।* 'मैं इस कार्य-अर्थ अवतरित हुई हूँ अर्थात् जैसे कि मैं इस कार्य अर्थ पृथ्वी पर वतन से आई हूँ कारोबार पूरी हुई, फिर वापस अपने वतन में। *जैसे कि बाप आते हैं, तो बाप को स्मृति है ना कि हम वतन से आये हैं, कर्तव्य के निमित्त और फिर हमको वापिस जाना है। ऐसे ही आप सबकी भी यह स्मृति बढ़नी चाहिए कि मैं अवतार हूँ अर्थात् मैं अवतरित हुई हूँ।* मैं मरजीवा बन रही हूँ, अभी मैं ब्राह्मण हूँ और फिर मैं देवता बनूँगी- यह भी वास्तव में मोटा रूप है। यह स्टेज भी साकारी है। *अभी आप लोगों की स्टेज आकारी चाहिए, क्योंकि आकारी से फिर निराकारी सहज बनेंगे।* जैसे बाप भी साकार से आकारी बना. आकारी से फिर निराकारी और फिर साकारी बनेंगे।' *अब आप लोगों को

भी अव्यक्त वतनवासी स्टेज तक पहुँचना है, तभी तो आप साथ चल सकेंगे।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- सवेरे-सवेरे उठकर शिवबाबा से गुडमॉर्निंग जरुर करना"*

➳ _ ➳ *अमृतवेला शुद्ध पवन है, मेरे लाडले जागो कहते हुए मेरे बाबा मुझे उठाते हैं... मैं आत्मा अपने प्राण प्यारे बाबा को सामने देख मुस्कुराते हुए गुडमॉर्निंग कर उनकी गोद में समा जाती हूँ...* अमृतवेले के रूहानी समय मे मैं आत्मा बापदादा का हाथ पकड पूरे ग्लोब का, सूक्ष्मवतन का, परमधाम का, सतयुगी दुनिया का चक्कर लगा रही हूँ... प्यारे बाबा की याद में लवलीन होकर विचार सागर मंथन कर मीठे बाबा से रूह-रिहान कर रही हूँ...

❉ *ढेर सारा याद प्यार देकर, गुड मॉर्निंग कर मीठी समझानी देते हुए प्यारे बाबा कहते हैं:-* "मेरे मीठे फूल बच्चे... *सवेरे सवेरे अपने सच्चे मीठे और प्यारे बाबा को गुडमोर्निंग अवश्य करो...* जनमो के बाद जो मीठा बाबा मिला है उसकी मीठी यादो के अनन्त सुख में खो जाओ... मीठे पिता को ही जीओ और उसकी यादो में वैसा ही खूबसूरत बन जाओ..."

➳ ➳ *मन दर्पण में एक बाबा की मरत को बसाकर साँझ. सवेरे एक

बाबा को ही निहारती हुई मैं आत्मा कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे प्यारे बाबा... मै आत्मा अब शरीर के सारे नातो से न्यारी होकर मीठे बाबा की यादो में खोयी हूँ.... बाबा ही मेरा संसार है... *बाबा से ही जीवन का सवेरा है बाबा ही मेरे जीवन का आधार है इस नशे में डूबी हुई हूँ..."*

❊ *अपनी मीठी यादों के रंगों में मेरे जीवन के हर पल को रंगीन बनाते हुए मीठे बाबा कहते हैं:-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे...अब देहधारियों को नही... अपने सच्चे सच्चे पिता को ही हर पल याद करो... ये यादे ही सुनहरे सुखो से दामन सजाएंगी... जीवन को सच्चे प्यार और मधुरता से छलकायेगी... *सवेरे उठकर मीठे बाबा को यादो में बसाओ..."*

➳ _ ➳ *पल-पल बाबा को प्यार से याद कर दिल ही दिल में उनसे बातें करते हुए मैं आत्मा कहती हूँ:-* "मेरे प्राणप्रिय बाबा... *मै आत्मा कितनी महान भाग्य से सजी हूँ की सवेरे सवेरे उठकर ईश्वर पिता को गुडमॉर्निंग कर रही हूँ...* मेरी यादो में स्वयं भगवान समाया है... अब इंसानी रिश्तो से ऊपर उठकर... मै भगवान को चाहने वाली उसकी यादो में जीने वाली खुशनसीब आत्मा हूँ..."

❊ *रिमझिम रिमझिम प्यार की बरसात में रूहानी प्यार का अनुभव कराते हुए मेरे बाबा कहते हैं:-* "प्यारे सिकीलधे मीठे बच्चे... अब सच्ची यादो का छलकता मौसम आ गया है... भगवान स्वयं धरती पर बच्चों के आकर्षण में बन्ध उतर गया है तो सच्चे प्यार के मधुमास में खो जाओ.... *सवेरे सवेरे सच्चे माशूक की सच्ची बेपनाह मुहोब्बत में गहरे डूब जाओ..."*

➳ _ ➳ *यादों की रोशनी से सीप में मोती समान जगमगाती बाबा की प्यारी परी बनकर मैं आत्मा कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे बाबा... मै आत्मा सच्चे प्यार को पाकर कितनी प्यार भरी हो गयी हूँ... कभी धरती की मिटटी से खेलने वाली आज आसमानी माशूक की बाँहों में झूल रही हूँ... *सवेरे मीठा माशूक मुझसे मिलने आये और मै आत्मा उसकी बाँहों में समाकर स्वयं को ही भूल सी जाऊँ..."*

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- कर्म करते भी याद का अभ्यास करना है*"

➳ _ ➳ अपने बुद्धि रूपी बर्तन को ज्ञान और योग से स्वच्छ बनाने के लिए मैं आत्मा *अपनी बुद्धि का कनेक्शन बुद्धिवानो की बुद्धि अपने शिव पिता के साथ जोड़ने के लिए, अपने सम्पूर्ण ध्यान को देह और देह की दुनिया से जुड़ी हर चीज से हटाकर केवल अपने स्वरूप पर और अपने शिव पिता परमात्मा के स्वरूप पर एकाग्र करती हूँ*। नश्वर देह के हर हिस्से से अपनी चेतना को समेट कर अब मैं भृकुटि सिहांसन पर विराजमान उस चैतन्य शक्ति को देख रही हूँ जो इस शरीर को चला रही है। *वो ऊर्जा का अखण्ड स्त्रोत मैं आत्मा हूँ जो इस शरीर रूपी रथ पर बैठ 84 जन्मो का अविनाशी पार्ट बजा रही है*।

➳ _ ➳ उस चैतन्य शक्ति को, अपने सत्य स्वरूप को मैं आत्मा अब अपने मन बुद्धि रूपी नेत्रों से देख रही हूँ। मेरा यह सत्य स्वरूप मुझे अपने अंदर निहित सर्वगुणों और सर्वशक्तियों की अनुभूति करवा रहा है। *मुझ आत्मा के अंदर समाहित सातों गुण और अष्ट शक्तियाँ अलग - अलग रंगों की अलग - अलग किरणों के रूप में मुझ चैतन्य सितारे से निकल कर चारों ओर फैल रहें हैं*। ये किरणे मुझे इन गुणों और शक्तियों का अनुभव करवाकर असीम सुकून प्रदान कर रही हैं।

➳ _ ➳ अपने इन गुणों और शक्तियों की किरणों को चारों ओर फैलाते हुए *अब मैं आत्मा भृकुटि सिहांसन को छोड़ ज्ञान, गुण और शक्तियों के सागर अपने शिव पिता के पास जा रही हूँ* जिन्हों ने मुझे ये सत्य ज्ञान दे कर, मेरे अंदर निहित गुणों और शक्तियों से मुझे अवगत करवा कर इस रूहानी यात्रा पर चलना सिखाया।

➳ _ ➳ यही सुंदर विचार करती अपने शिव पिता से मिलने की लगन में मग्न मैं आत्मा अपने प्यारे बाबा के अनुपम प्यार को स्वयं में समाए अब पाँच तत्वों की बनी इस साकारी दुनिया को पार कर जाती हूँ और *इन स्थूल सितारों की दुनिया से ऊपर, सूक्ष्म लोक से भी परें चैतन्य सितारों की उस सुंदर लुभावनी दुनिया मे प्रवेश कर जाती हूँ जहां मेरे शिव पिता रहते हैं*। निराकारी आत्माओं की यह निराकारी दुनिया परमधाम मुझ आत्मा का और मेरे पिता परमात्मा का घर है। इस स्वीट साइलेन्स होम में आ कर मैं गहन शांति की अनुभूति में खो जाती हूँ। *इस शांतिधाम में शांति के सागर शिव पिता से निकल रहे शांति के गहन वायब्रेशन चारों ओर फैले हुए हैं*।

➳ _ ➳ शांति की गहन अनुभूति करते - करते अब मैं आत्मा अपने शिव पिता के समीप जा रही हूँ। बाबा की सर्वशक्तियों की किरणों की छत्रछाया के नीचे बैठ, शक्तियों की किरणों की मीठी फुहारों का मैं आनन्द ले रही हूँ। *इन शीतल फुहारों की शीतल बूंदें मुझ आत्मा के ऊपर चढ़ी विकारों की कट को उतार कर मेरे बुद्धि रूपी बर्तन को स्वच्छ बना रही हैं। मुझ आत्मा के ऊपर चढ़ी विकारों की मैल जैसे - जैसे उतर रही है वैसे - वैसे मेरी बुद्धि शुद्ध और पावन बनती जा रही है*। मुझ आत्मा का बुद्धि रूपी बर्तन सच्चे सोने के समान चमकदार बनने लगा है।

➳ _ ➳ अपने शिव पिता की सर्वशक्तियों की किरणों की फुहारों से अपने बुद्धि रूपी बर्तन की सफाई करके अब मैं आत्मा फिर से कर्म करने के लिए परमधाम से वापिस अपनी कर्मभूमि पर लौट रही हूँ। *सूक्ष्म वतन से होती हुई, आकाश से नीचे वापिस पाँच तत्वों की बनी उसी साकारी दुनिया में अब मैं प्रवेश कर रही हूँ जहाँ मुझे अपने साकारी शरीर रूपी रथ का आधार ले कर अपना पार्ट पूरा करना है*।

➳ _ ➳ अपने साकारी तन में अब मैं आत्मा भृकुटि पर विराजमान हूँ और अपने ब्राह्मण स्वरूप में स्थित रहते हुए अपने इस इस संगमयुगी ब्राह्मण जन्म का अद्भुत पार्ट बजा रही हूँ। *अपने संगमयुगी ब्राह्मण स्वरूप को सदा स्मृति में रख अब मैं इस बात का विशेष ध्यान रखती हूँ कि बुद्धि किसी भी कर्म में मलीन ना हो*। हर कर्म बाबा की याद में रह कर करते हुए अपने हर

कर्म को मैं श्रेष्ठ बना रही हूँ।

➳ _ ➳ *खाते - पीते, चलते - फिरते, सोते - उठते हर समय बुद्धि का योग केवल अपने शिव पिता के साथ जोड़े, उनकी छत्रछाया को सदा अपने ऊपर अनुभव करते, हर कर्म में अपने शिव पिता को साथी बना कर, अपने हर कर्म की श्रेष्ठता द्वारा मैं अपने सम्बन्ध सम्पर्क में आने वाली आत्माओं को भी परमात्म प्यार और पालना का अनुभव करवा सहज ही रही हूँ*।

———————————————————

∬ 8 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं तड़फती हुई भिखारी, प्यासी आत्माओं की प्यास बुझाने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं सर्व खजाने से सम्पन्न आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————————

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदैव कल्याण की भावना रख शिक्षा देती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा शिक्षाओं को सदा दिल से लगते हुए अनुभव करती हूँ ।*
✺ *मैं विश्व कल्याणकारी आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ 1. *अमृतवेले से लेकर हर चलन को चेक करो - हमारी दृष्टि अलौकिक है? चेहरे का पोज सदा हर्षित है? एकरस, अलौकिक है वा समय प्रति समय बदलता रहता है?* सिर्फ योग में बैठने के समय वा कोई विशेष सेवा के समय अलौकिक स्मृति वा वृत्ति रहती है व साधारण कार्य करते हुए भी चेहरा और चलन विशेष रहता है? कोई भी आपको देखे - कामकाज में बहुत बिजी हो, कोई हलचल की बात भी सामने हो लेकिन आपको अलौकिक समझते हैं? तो *चेक करो कि बोल-चाल, चेहरा साधारण कार्य में भी न्यारा और प्यारा अनुभव होता है? कोई भी समय अचानक कोई भी आत्मा आपके सामने आ जाए तो आपके वायब्रेशन से, बोल-चाल से यह समझेंगे कि यह अलौकिक फरिश्ते हैं?*

➳ _ ➳ 2. बापदादा जानते हैं कि बहुत अच्छे-अच्छे पुरुषार्थी,पुरुषार्थ भी कर रहे हैं, उड़ भी रहे हैं लेकिन बापदादा इस 21वीं सदी में नवीनता देखने चाहते हैं। सब अच्छे हो, विशेष भी हो, महान भी हो लेकिन *बाप की प्रत्यक्षता का आधार है - साधारण कार्य में रहते हुए भी फरिश्ते की चाल और हाल हो।* बापदादा यह नहीं देखने चाहते कि बात ऐसी थी, काम ऐसा था, सरकमस्टांश ऐसे थे, समस्या ऐसी थी, इसीलिए साधारणता आ गई। फरिश्ता स्वरूप अर्थात् स्मृति स्वरूप में हो, साकार रूप में हो। सिर्फ समझने तक नहीं, स्मृति तक नहीं, स्वरूप में हो। ऐसा परिवर्तन किसी समय भी, किसी हालत में भी अलौकिक स्वरूप अनुभव हो। ऐसे है या थोड़ा बदलता है? जैसी बात वैसा अपना स्वरूप नहीं बनाओ। बात आपको क्यों बदले, आप बात को बदलो। बोल आपको बदले या आप बोल को बदलो?परिवर्तन किसको कहा जाता है? प्रैक्टिकल लाइफ का सैम्पल किसको कहा जाता है? जैसा समय, जैसा सरकमस्टांश वैसे स्वरूप बने - यह तो साधारण लोगों का भी होता है। लेकिन *फरिश्ता अर्थात जो पराने

या साधारण हाल-चाल से भी परे हो।*

➳ _ ➳ *इस नई सदी में बापदादा यही देखने चाहते हैं कि कुछ भी हो जाए लेकिन अलौकिकता नहीं जाए।* इसके लिए सिर्फ चार शब्दों का अटेन्शन रखना पड़े, वह क्या? वह बात नई नहीं है, पुरानी है,सिर्फ रिवाइज करा रहे हैं। एक बात - शुभचिंतक। दूसरा - शुभ-चिंतन, तीसरा - शुभ-भावना, यह भावना नहीं कि यह बदले तो मैं बदलूं। उसके प्रति भी शुभ-भावना, अपने प्रति भी शुभ-भावना और 4- शुभ श्रेष्ठ स्मृति और स्वरूप। *बस एक 'शुभ' शब्द याद कर लो,इसमें 4 ही बातें आ जायेंगी। बस हमको सबमें शुभ शब्द स्मृति में रखना है।* यह सुना तो बहुत बारी है। सुनाया भी बहुत बारी है। अब और स्वरूप में लाने का अटेन्शन रखना है।

✺ *ड्रिल :- "बाप की प्रत्यक्षता का आधार- सदा फरिश्ता स्वरूप स्थिति में रहने का अनुभव"*

➳ _ ➳ मैं आत्मा स्व चिंतन करती हुई एक झील के पास बैठी हूँ... स्व स्वरूप का चिंतन करते हुए मेरा मन पूरी तरह शांत होता जा रहा है... मैं आत्मा पास के उद्यानों की सुंदरता को निहार रही हूँ... *पक्षियों का सुंदर कलरव मन को आनंदित कर रहा है... पक्षियों की उड़ान, मधुर ध्वनि... जीवन को हल्का, प्रसन्न रखने की जैसे कि प्रेरणा दे रही है... खिलते, मुस्कुराते फूल जैसे कह रहे हैं कि... सदा मुस्कुराते हुए दिव्य गुणों की खुशबू से... स्वयं का और सर्व का जीवन सुगंधित करना है...*

➳ _ ➳ झील में किनारे पर कमल पुष्प खिले हुए बहुत सुंदर लग रहे हैं... कमल फूल तो जैसे जीवन जीने का तरीका सिखा रहे हैं... किस तरह से ये जल में जन्म लेते हैं, जल में पलते और बढ़ते हैं... लेकिन पानी की एक बूँद भी इन पर ठहर नहीं सकती... *संसार में रहते हुए, सब कुछ करते हुए किस तरह से न्यारा और प्यारा रह सकते हैं... यह सुंदर पाठ पढ़ाते हैं कमल के ये खिलखिलाते सुंदर पुष्प*... यह चिंतन करते-करते मैं आत्मा स्वयं को कमल आसन पर देख रही हूँ... ऊपर से पवित्रता के सागर शिवबाबा से... पवित्रता की किरणें, शीतल फहारों के रूप में मुझ पर बरस रही हैं...

➳ _ ➳ बाबा की किरणों रूपी जल में नहाते-नहाते... मुझ आत्मा की जन्म जन्म की मैल धूल रही है... *व्यक्त भाव समाप्त हो अव्यक्त स्थिति बनती जा रही है... मेरी दृष्टि दिव्य, अलौकिक हो गई है... एकरस, मधुर आनंदमय अवस्था बन गई है... मेरा चेहरा खुशी से जगमगा रहा है... मेरी चलन, मेरे हर कर्म में अलौकिकता, विशेषता समाती जा रही है*... मैं आत्मा विशेष आत्मा के स्वमान में स्थित होकर हर कर्म कर रही हूँ... मेरे बोल, संकल्प, कर्म से साधारणता समाप्त हो रही है... मेरा जीवन कमल पुष्प समान न्यारा और प्रभु प्यारा बनता जा रहा है...

➳ _ ➳ मैं अव्यक्त फरिश्ता स्वरुप में बाबा की किरणों में नहाती हुई... अपने संबंध संपर्क में आने वाली हर आत्मा को दिव्यता, अलौकिकता की अनुभूति करा रही हूँ... *मेरा हर कर्म फरिश्ते समान अव्यक्त स्थिति की अनुभूति करा रहा है... फरिश्ता स्वरुप मेरी भविष्य स्टेज नहीं, मेरी वर्तमान स्थिति है... मेरा वर्तमान स्वरुप है... मैं आत्मा फरिश्ता स्वरुप में स्थित हूँ*... कोई भी बात, कोई भी परिस्थिति मेरी स्थिति को हलचल में नहीं ला सकती... हर प्रकार के पुराने, साधारण संकल्प, बोल, कर्म से परे... मैं फरिश्ता स्वरुप की न्यारी और प्यारी अवस्था में स्थित हूँ... अपनी फरिश्ता स्वरुप स्थिति द्वारा अपने मीठी बाबा की प्रत्यक्षता का आधार बन रही हूँ...

➳ _ ➳ मैं अपने मीठे बापदादा की उम्मीदों का सितारा हूँ... उनकी आशाओं का दीपक हूँ... अपनी अलौकिक स्थिति में स्थित हूँ... *मैं हर आत्मा के प्रति शुभ चिंतन कर रही हूँ... हर एक के प्रति मेरी वृति शुभचिंतक की है... सर्व के प्रति और स्वयं के प्रति भी मेरे मन में शुभ भावना समाई हुई है*... मैं आत्मा शुभ और श्रेष्ठ स्मृति और स्वरूप में स्थित हूँ... *बाबा की मीठी मीठी शिक्षाओं का प्रैक्टिकल स्वरुप बनती हुए मैं फरिश्ता... अपने मीठे बाबा को विश्व में प्रत्यक्ष करने के निमित्त बन रही हूँ...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔